1.) श्रीनृसिंहं गणपतिं गुरुं दुर्गां शिवं गिरं । नत्वा त्रयोदशेऽध्याये वेददीपं ब्रुवे शुभं ॥ द्वादशे M. and MM. 2.) See पाणि° ६.४.७३. 3.) सम्यक् MM. 4.) शत्रुत्र सहते MM. शत्रून्न स° A. 5.) षेवाल्लिषु MM. 6.) समुद्रवन्ति? 7.) against the accent and the Pada. अन्तः is to be disjoined from हृदा. 8.) सप्त-सप्त । एकैकमित्यन्ये M. MM. 9.) °याद्दीकारः A. °याद्दीकारौ M. °याद्दीकारो MM. 10.) चितिं चेतव्यं MM. चित्तिं चेतव्यं A. The text reads °चित्तिं. 11.) रजसो प्रजापते A. M. MM. 12.) एतच्च A. 13.) नृन् A. नृः B. नंृः C. नँृः EIH 2479. नृ७ः K. J. See १८.७७. where we find the following readings: नृः B. नँृः C. नंृः EIH 2479. नृ७ः K. J. 14.) एमन् A. MM. 15.) मन् लोपश्च A. मन्नो लोपश्च MM. 16.) °मोह्मन् A. MM. 17.) इयमपाम° the Brâhm. The word पृथिवी is a gloss. 18.) Kâtyâyana reads दश-दश पुरुषमुपार्श्वैके रेतःसिग्वेलायां च सर्वतो यथायोगमयं पुर इति प्र°. 19.) भरत् A. 20.) °त्तरतस्तस्थौ A. °रत्र तस्थौ MM. 21.) °त्सुमित्रं A. °त्समित्रं M. MM. 22.) °मित्रऋषिद्रूपं A. MM. 23.) ये-ये ना° A. MM. 24.) °कर्मऽर्षि° A. MM. 25.) °तृषा लो° MM. 26.) विश्वेति A. MM. see Adhyâya XII. not. 16. 17. 27.) M. and MM add. इति वेददीपे प्रथमचित्युपधानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः. —

Adhyâya XIV. kaṇḍ. १-३१ are explained in the Çatap. Brâhm. ८, २, १, ४-४, ३, १३ and quoted by Kâtyâyana १७, ८, १५-१०, १३.

1.) श्रीनृसिंहं गणपतिं प्रणम्य कृपया तयोः । अयं चतुर्दशाध्याये वेददीपो वितन्यते ॥ त्रयोदशाध्याये M. and MM. but M reads both times °शेऽध्याये. 2.) उख्यस्याग्ने M. °स्याग्ने MM. 3.) वीर्येणोद्ह तिष्ठेति M. MM. 4.) द्रविणो MM. 5.) मन्त्रविशेषो? coni. उदङ्मुख - पद्य is wanting in MM. 6.) ज्यैष्ठमासः M. 7.) प्रातिकसु° M. प्रतिकसु° MM. 8.) समानस्य is wanting in M. 9.) वयोनाधाः M. ते वयोनाधाः - श्रुतेः is wanting in MM. 10.) M adds एवमुत्तरमन्त्रेष्वपि. 11.) सर्वं - विश्वैर्दे° is wanting in MM. 12.) तनयचा M. 13.) दर्शनसमर्थं - °वणासमर्थं is wanting in MM. 14.) बहुशासुश्रव° M. the शब्द is my